7वें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के अवसर पर संवाददाता सम्मेलन में प्रधानमंत्री का वक्तव्य

हेलसिंकी, फिनलैंड
13 - अक्तूबर - 2006

महामहिम प्रधानमंत्री मैट्टी वानहैनेन, प्रेस के बहनो और भाइयो,

प्रधानमंत्री वाहनेन, आपने यहां पर हमारा जो शानदार स्वागत किया है, उसके लिए आपको धन्यवाद देते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यूरोपीय आयोग के जो नेतागण यहां मौजूद हैं, मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूं। हमें उनके विचारों से बहुत लाभ मिला है।

यूरोपीय संघ के साथ महत्वपूर्ण साझीदारी को सुदृढ क़रना भारत की विदेश नीति की प्राथमिकता है। यूरोपीय संघ केवल व्यापार में भारत का सबसे बड़ा साझीदार नही है, बल्कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में हमारा सबसे बड़ा स्रोत और उच्च प्रौद्योगिकी में हमारा सहयोगी है।

आज सवेरे हमने संयुक्त कार्य योजना के अमल की प्रगति की समीक्षा की, जिसपर पिछले वर्ष सितम्बर में नई दिल्ली में शिखर सम्मेलन में भारत और यूरोपीय संघ के बीच सहमति हुई थी।

दोनों पक्ष राजनीतिक और सामरिक वार्ता को आगे बढ़ाने तथा आर्थिक और व्यापार संबंधों को और मजबूत करने के अपने संकल्प पर दृढ हैं। इस बात की पूरी मान्यता रही कि भारत में चल रहे आर्थिक उदारीकरण से यूरोपीय संघ के देशों के लिए बहुत अवसर खुले हैं।

इस बारे में भी संकल्प व्यक्त किया गया कि जो मुद्दे द्विपक्षीय व्यापार और निवेश संबंधों के आड़े आते हैं, उनसे निपटा जाएगा। भारत और यूरोपीय संघ का कल व्यापार शिखर सम्मेलन हुआ था, जो व्यापार संबंधों को मजबूत बनाने का एक उपयोगी मंच बना। प्रधानमंत्री वाहनेन और मैंने इस व्यापार शिखर सम्मेलन को संबोधित किया था। भारत और यूरोपीय संघ उच्च प्रौद्योगिकी वाले एकीकृत ताप ऊर्जा रिएक्टर-आईटीईआर परियोजना में पहले ही भागीदार हैं। हमें उम्मीद है कि यूरोपीय आयोग गैलिलियो प्रोजेक्ट में भारत की पूर्ण सदस्यता के बारे में जल्दी स्वीकृति दे देगा।

हमारी वार्ता की मुख्य बात यह थी कि शिखर सम्मेलन ने उच्च स्तरीय व्यापार समूह की रिपोर्ट में उल्लिखित सिफारिशों की पुष्टि कर दी। हम व्यापक आधार वाले व्यापार और निवेश समझौते के बारे में वार्ता शुरू करने के लिए सहमत हो गए हैं। इससे भारत और यूरोपीय संघ के बीच करों और व्यापार की मात्रा से संबंधित 90 प्रतिशत से अधिक पहलुओं पर विचार होगा। निःसंदेह यह एक बहुत बड़ा कदम है, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ेगा और कुछ समय के अंदर करों में कमी कर दी जाएगी। यह स्थिति दोनों के लिए लाभदायक होगी।

ऊर्जा ओर पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर भी हमारी उपयोगी चर्चा हुई है। मैंने यूरोपीय संघ को अपना यह विचार बताया है कि असैनिक ऊर्जा परमाणु के क्षेत्र में प्रगतिशील दृष्टिकोण

रखते हुए से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना भारत जैसे देशों के लिए महत्वूपर्ण है, जिनका परमाणु अप्रसार के मामले में साफ-सुथरा रिकार्ड है। इससे उन्हें प्रदूषण न फैलाने वाला ऊर्जा का वैकल्पिक स्रोत मिल जाएगा, जिससे उनकी ऊर्जा की बढ़ती मांग की पूर्ति हो सकेगी।

भारत और यूरोपीय संघ लोकतंत्रीय, बहु-समुदायी और कानून के शासन के प्रति समान विचार रखने के कारण स्वाभाविक भागीदार हैं। हमारा विश्वास है कि हमारी भागीदारी वैश्विक आत्मनिर्भरता की चुनौतियों, विशेष रूप से आतंकवाद, परमाणु प्रसार, ऊर्जा, और पर्यावरण से संबंधित चुनौतियों का मुकाबला करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हमारे साथ पड़ोस में अस्थिरता की स्थिति के बारे में हमारी बहुत उपयोगी चर्चा हुई, जो भारत और यूरोपीय संघ दोनों के लिए चिंता का विषय है। हाल में मुम्बई में हुए विस्फोट और इससे पहले लंदन, मैड्रिड और श्रीनगर में हुए विस्फोट, हमें इस बात की याद दिलाते हैं कि आतंकवाद लोकतंत्रीय, खुले और बहुसमुदायी देशों के लिए अभी भी सबसे बड़ा खतरा है। इसलिए इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अंतराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत बनाना सभी स्वतंत्र और लोकतंत्रीय समाजों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमने सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के दायरे को बढाने सहित संयुक्त राष्ट्र में सुधार से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा की। हम दोनों इस बात पर सहमत थे कि नियमों पर आधारित बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था भारत और यूरोपीय संघ दोनों के हित में है। इसलिए हम विभिन्न देशों के मतभेदों को दूर करने के लिए आगे प्रयास जारी रखने का समर्थन करते हैं, ताकि दोहा दौर की वार्ता फिर से शुरू हो सके।

मैं शिखर सम्मेलन के परिणामों से पूरी तरह संतुष्ट हूं। मैं प्रधानमंत्री वाहनेन और यूरोपीय संघ के अन्य नेताओं का उनके योगदान के लिए आभारी हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

****